सत्यार्थ प्रकाश

का

पोस्टमार्टम

सतलोक आश्रम

(1) दौलतपुर रोड़, बरवाला, जि. हिसार (हरि०)।

(2) रोहतक झज्जर रोड़, करौंथा, जि. रोहतक (हरि०)।

☎ 9992600801, 9992600802, 9992600803

9812166044, 9812151088, 9812026821, 9812142324

विषय सूची

1.	सत्यार्थ प्रकाश का पोस्टमार्टम	1
2.	सत्यार्थ प्रकाश में समाज नाश की झलक	1
3.	महर्षि दयानन्द को वेद ज्ञान नहीं	3
4.	महर्षि दयानन्द की जीवनी	8
5.	महर्षि दयानन्द ने 13 गुरु बनाए	9
6.	स्वामी दयानन्द के तेरहवें गुरु विरजानन्द विष्णु उपासक थे	10
7.	गीता प्रक्षिप्त नहीं है (अर्थात् गीता में मिलावट नहीं है)	11
8.	स्वामी दयानन्द की वेषभूषा	11
9.	स्वामी दयानन्द अभ्रक भस्म खाते थे तथा सारे तन पर राख रमाते थे	11
10.	स्वामी दयानन्द भांग पीते थे	12

11. स्वामी दयानन्द तम्बाकू सूंघते थे 12
12. स्वामी दयानन्द का त्याग दिखावा मात्र था 12
13. स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु विष या कांच खिलाने से नहीं हुई 13

❑❑❑

❁ सत्यार्थ प्रकाश का पोस्टमार्टम ❁

☛''सत्यार्थ प्रकाश में समाज नाश की झलक''

सत्यार्थ प्रकाश (प्रकाशक :- वैदिक यति मण्डल दयानन्द मठ दिनानगर पंजाब, मुद्रक :- आचार्य प्रिटिंग प्रैस गोहाना मार्ग रोहतक हरयाणा)

समुल्लास 4 पृष्ठ 71 पर स्वामी दयानन्द जी का आर्य समाज के व्यक्तियों को आदेश है कि :-

1. अपनी 24 वर्ष की लड़की का विवाह 48 वर्ष के व्यक्ति से करें यह उत्तम विवाह समय है।

2. समुल्लास 4 पृष्ठ 96 व 97 पर कहा है कि विधवा स्त्री विवाह न करें। वह नियोग करे। नियोग की परिभाषा बताई है कि वह विधवा स्त्री किसी अन्य पुरूष के पास जाकर पशु की तरह गर्भ धारण कर ले। वह उत्पन्न हुई संतान मृत पति की ही मानी जाएगी उसी का गौत्र होगा।

3. जीवित पति वाली स्त्री अर्थात् सुहागिन भी नियोग (पशु तुल्य कर्म) करे। (समु. 4 पृष्ठ 102)

2 सत्यार्थ प्रकाश में समाज नाश की झलक

क. जिसका पति धन कमाने रोजगार के लिए दूर गया हो तो वह स्त्री तीन वर्ष बाट देखकर नियोग (पशु तुल्य कर्म) करके अर्थात् किसी अन्य पुरूष से गर्भ धारण करके संतान उत्पन्न कर ले। वह संतान पति की ही मानी जाए।

ख. यदि किसी का पति दुःखी करता हो मारता-पीटता हो तो वह स्त्री अपने पति से तो शारीरिक सम्बन्ध न करे किसी अन्य पुरूष के पास जाकर गर्भ धारण (पुश तुल्य कर्म नियोग) करके संतान उत्पन्न करे। वह संतान जो गैर पुरूष से उत्पन्न होगी। विवाहित पति की सम्पति के दायभागी अर्थात् हकदार होंगे।

ग. पृष्ठ 103 पर लिखा है :- स्त्री के गर्भ रहने के पश्चात् एक वर्ष तक स्त्री पुरूष मिलन नहीं करें। यदि पुरूष से न रहा जाए तो किसी विधवा स्त्री से नियोग (पशु तुल्य कर्म) करके सन्तान उत्पत्ति कर दे।

कृप्या सभ्य समाज स्वयं विचार करे ''सत्यार्थ

प्रकाश'' जैसे शास्त्र के पढ़ने से चरित्र हीनता तथा अश्लीलता बढ़ेगी या घटेगी।

घ. स्वामी दयानन्द जी ने विधवा विवाह न करने का कारण बताया है कि पुनः विवाह से तो स्त्री का पतिव्रत धर्म नष्ट हो जाएगा। (समु. 4 पृष्ठ 97)

फिर समुल्लास 4 पृष्ठ 101 पर लिखा है कि विधवा स्त्री ग्यारह पुरूषों तक नियोग (पशु तुल्य कर्म) कर सकती है।

(क्या इस कुकर्म से उस स्त्री का पतिव्रत धर्म सुरक्षित रहेगा? वाह रे समाज नाशक दयानन्द तू गर्भ में ही क्यों ना मर गया था।)

☞''महर्षि दयानन्द को वेद ज्ञान नहीं था''

आर्य समाज प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी को वेदों का पूर्ण विद्वान माना जाता है परन्तु उनको वेद ज्ञान बिल्कुल नहीं था। स्वामी दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' नामक पुस्तक की रचना की

थी। जिसके विषय में उन्होंने लिखा है कि यह पुस्तक वेद आदि सद्ग्रन्थों के आधार से प्रमाण सहित लिखी हैं। ''सत्यार्थ प्रकाश'' पुस्तक को गहरी नजर से देखा तथा वेदों से तुलना की तो पाया कि यह ''सत्यार्थ प्रकाश'' पूर्ण रूप से वेद ज्ञान के विपरीत कोरे अज्ञान से भरा पड़ा है। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि :-

1. परमात्मा एक देशीय नहीं है। निराकार है। जबकि वेद बताते हैं कि परमात्मा साकार है। नराकार (मानव सदृश शरीर युक्त है) उसका शरीर तेजोमय है। जैसे सूर्य स्वयं प्रकाशमान तथा साकार है। परमात्मा एक देशीय है। वह तीसरे मुक्ति धाम में साकार विराजमान है।

प्रमाण :- यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 व अध्याय 1 मंत्र 15 में ऋग्वेद मण्डल 1 सुक्त 31 मंत्र 17 का अनुवाद स्वामी दयानन्द जी द्वारा किया गया है। जिसमें लिखा है ''मनुष्वदग्ने'' (मनुष्यवत्) अर्थात् मनुष्य जैसे (अग्ने) परमेश्वर आप जैसे

पहले समय में अपने सत्यधाम (ऋतधाम) से चलकर अपने अच्छे सेवकों को यहाँ आकर मिलते हो वैसे ही हमें प्राप्त हुजिए। यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 86 मंत्र 26-27 तथा ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मंत्र 1 से 3 ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 96 मण्डल 18-19-20 में स्पष्ट है कि परमात्मा मनुष्य की तरह एक राजा की तरह देखने योग्य है। जो ऊपर अन्तरिक्ष में एक स्थान तीसरे मुक्ति धाम में विराजमान है साकार है। वह अपने उस लोक (स्थान) से चलकर गर्जता हुआ इस लोक में आता है तथा एक भक्त समुदाय का सेनापति की तरह अर्थात् गुरु रूप में नेतृत्व करता है।

''सत्यार्थ प्रकाश'' (जिसका प्रकाशक है वैदिक यति मण्डल, दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब तथा मुद्रक :- आचार्य प्रिटिंग प्रैस गोहाना मार्ग रोहतक) के समुल्ला 7 पृष्ठ 155 पर लिखा है कि ''ईश्वर की उपासना से परब्रह्म से मेल तथा उसका

साक्षात्कार हो जाता है।

विचार करें :- साक्षात्कार तथा मेल तो साकार परमात्मा से सम्भव है। यदि परमात्मा सर्व व्यापक हैं तो उपासना से पूर्व भी मिला हुआ था। फिर उपासना से मिलन क्या?

2. स्वामी दयानन्द ने उपरोक्त प्रकाशन वाले ''सत्यार्थ प्रकाश'' के समुल्लास 7 के प्रारम्भ में पृष्ठ 151 पर लिखा है कि वेद में एक ब्रह्म (ईश्वर) लिखा है। अनेक ब्रह्म (ईश्वर) नहीं हैं। स्वयं समुल्लास 7 में पृष्ठ 155 पर कहा है कि उपासना से परब्रह्म से मेल तथा उसका साक्षात्कार हो जाता है।

कृप्या विचार करें :-'परब्रह्म' शब्द ही दो ब्रह्मों का बोध करा रहा है जैसे एक ब्रह्म दूसरा परब्रह्म जैसे एक दादा दूसरा परदादा। फिर यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 17 में स्वयं अपने कर कमलों से दो परमात्मा (ब्रह्म) सिद्ध कर रहा है। लिखा है कि वेद ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि वह पूर्ण

परमात्मा तो ऊपर परोक्ष अर्थात् छुपा हुआ है। मैं ब्रह्म हूँ मेरा 'ओ३म्' नाम है ऐसा जानों।

स्वामी दयानन्द जी के एक ईश्वर वाले सिद्धान्त को भी वेद ने ही झूठा सिद्ध कर दिया।

3. स्वामी दयानन्द जी ने उपरोक्त प्रकाशन व मुद्रक वाले सत्यार्थ प्रकाश के समुल्लास 7 पृष्ठ 155 व 163 पर लिखा है कि परमात्मा की साधना उपासना अर्थात भक्ति से परमात्मा भक्त के पाप नाश (क्षमा) नहीं करता। जबकि यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में छः बार लिखा है कि परमात्मा साधक के सर्व पाप नाश कर देता है। अधर्म के अधर्म अर्थात् घोर पाप को भी नाश कर देता है।

उपरोक्त प्रमाणों से पवित्र वेदों ने ही स्वामी दयानन्द के ''सत्यार्थ प्रकाश'' को मिथ्या सिद्ध कर दिया। इससे सिद्ध है कि सत्यार्थ प्रकाश में देशी घी के नाम पर गधे की लीद (गोबर) भरा है।

4. सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 8 के अन्त में पृष्ठ 197-198 (उपरोक्त प्रकाशन वाले में) पर

लिखा है सूर्य पर पृथ्वी की तरह मनुष्य तथा अन्य प्राणी रहते हैं तथा वह सर्व पदार्थ (जैसे काजु-किशमश, मेवे आदि बाग बगीचे, दरिया व जल) हैं

☛"महर्षि दयानन्द की जीवनी"

1. पुस्तक :- ''श्री मत् दयानन्द-प्रकाश'' *तथा लेखकः- श्री सत्यानन्द जी महाराज, प्रकाशक :- सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-2 तथा*

2. पुस्तक :- महर्षि दयानन्द ''समग्र क्रान्ति के अग्रदूत'' *जिस में अनु पुस्तक* ''महर्षि दयानन्द जीवनवृत और कृतित्व'' *जिस के सम्पादक* ''स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती'' *लेखिका :- डा. उषा ज्योतिष्मति'' तथा प्रकाशक :- डा. रत्न कुमारी स्वाध्याय संस्थान विज्ञान परिषद् भवन महर्षि मार्ग इलाहाबाद-211002. मुद्रक सरयु प्रसाद पाण्डेय नागरी प्रैस अलोपी इलाहाबाद (पृष्ठ 8*

से 24)

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर उपरोक्त पुस्तकों से निष्कर्ष रूप में यथार्थ भाव सहित संक्षिप्त विवरण लिखा जाता है :-

पुस्तक :- ''श्रीमत् दयानन्द प्रकाश'' *से स्वामी दयानन्द जी के पूज्य पिता जी का नाम कर्षनजी था। जो उदीच्य ब्राह्मण थे।*

➢ *श्री दयानन्द जी का वास्वतिक नाम मूल जी था। स्वामी जी का जन्म संवत् 1881 (सन् 1824) में हुआ।*

➢ *बाईस वर्ष की आयु में घर त्याग कर मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए चल पड़े।*

(स्वामी दयानन्द जी के अनुयाई कहते हैं कि स्वामी जी गुरूडम अर्थात् गुरू बनाने के विरोधी थे। कृप्या पाठक जन देखें स्वामी दयानन्द जी ने कितने गुरू बनाए)

☞ **''महर्षि दयानन्द ने 13 गुरु बनाए''**

➢ *तीन वर्ष नर्मदा नदी के तीर पर भटकते*

रहे। सन्तों-ऋषियों का सत्संग सुनते रहे। तत्पश्चात एक श्री विरजानन्द जी की महिमा सुनकर मथुरा पहुँचे।

☞''स्वामी दयानन्द के तेरहवें गुरु विरजानन्द विष्णु उपासक थे''

➢ *(तेरहवां गुरू) श्री विरजानन्द जी पांच वर्ष की आयु से अन्धे थे। जिनकी आँखें पाँच वर्ष की आयु में शीतला के कारण समाप्त हो गई थी। (पृष्ठ 40) श्री विरजानन्द जी उत्तम कोटी के दण्डी सन्यासी थे। (पृष्ठ 43) उस समय श्री दयानन्द सरस्वती की आयु 36 वर्ष की थी (सम्वत् 1917)।(पृष्ठ 40से 52)*

(उपरोक्त विवरण वैराग्य काण्ड सातवें से दसवें सर्ग पर पृष्ठ 40 से 52 तक है) तत्पश्चात् अपने आप को पूर्ण ज्ञानयुक्त मान कर स्वामी दयानन्द जी देश-देशान्तर में घूम कर तेरह अधूरे गुरूओं तथा ज्ञानहीन अन्य सन्यासियों से संग्रह

किये (कहीं की ईट कहीं का रोड़ा) ज्ञान का प्रचार करने लगे जिसका प्रमाण उनके द्वारा रची पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' है जिसमें सत्य का नामोनिशान भी नहीं है, कोरी बकवाद भरी है।

☞ "गीता प्रक्षिप्त नहीं है (अर्थात् गीता में मिलावट नहीं है)"

स्वामी दयानन्द जी ने पृष्ठ 162 पर कहा है कि गीता प्रक्षिप्त नहीं है यदि किसी को संस्य है तो मेरे साथ शास्त्रार्थ करे। पृष्ठ 55, 213

☞''स्वामी दयानन्द की वेषभूषा''

➢ *पृष्ठ 75 पर लिखा है स्वामी दयानन्द जी दोसाला ओढते थे, पाँव में जुराब तथा गले में स्फटिक की माला भी पहनते थे।*

☞''स्वामी दयानन्द अभ्रक भस्म खाते थे सारे तन पर राख रमाते थे ''पृष्ठ 75

☛"स्वामी दयानन्द भांग पीते थे"

➢ *पुस्तक :* "महर्षि दयानन्द समग्र क्रान्ति के अग्रदूत'' *पृष्ठ 8 तथा 21 पर लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी ने अपने जीवन चरित्र में स्वयं ही स्वीकारा है कि वे माता पिता की सेवा करने के विरोधी थे तथा स्वामी दयानन्द जी भांग पीते थे तथा भांग की मादकता से बेसुध हो जाते थे।*

☛"स्वामी दयानन्द तम्बाकू सूंघते थे"

(पुस्तक :- ''श्रीमद् दयानन्द प्रकाश'' *पृष्ठ 138 पर लिखा हैं)*

☛''स्वामी दयानन्द का त्याग दिखावा मात्र था''

➢ *पृष्ठ 436 पर लिखा है कि स्वामी दयानन्द जी हरिद्वार में तो सर्वधन व वस्तुओं को त्याग कर वैरागी तथा मौनी हो गए क्योंकि अधिक वस्तु संग्रह तथा धन संग्रह साधना में बाधक बन जाता*

है फिर मृत्यु काल में 700 रूपये तो कल्लु सेवक लेकर चम्पत हो गया। कुछ रूपये जगन्नाथ रसोईया को यात्रा खर्च देकर भगा दिया। आज (सन् 2006) से 123 वर्ष पूर्व सात सौ रूपये का आज के पांच लाख रूपये से भी अधिक मूल्य होता था। उस समय एक उच्च अधिकारी का मेहनताना पचास रूपये होता था। आज पचास हजार रूपये है। देसी घी उस समय चार आने (25 पैसे) का सेर (एक कि.ग्रा.) आता था। आज 200 रूपये प्रति कि.ग्रा. (सेर) आता है। इस तुलना से सात सौ रूपये की कीमत आज(सन् 2006 में) पांच लाख से भी अधिक है।

➢ *स्वामी जी कभी-2 घोड़ा बुग्गी में बैठकर यात्रा करते थे।*

☞"स्वामी दयानन्द जी की मृत्यु विष या कांच खिलाने से नहीं हुई"

(सम्वत् 1940 अर्थात् सन् 1883 में 59 वर्ष

की आयु में एक महीने तक चारपाई पर पड़ा रह कर, महान पीड़ा सहन करके, दुर्दशा से मृत्यु हुई। उनका मल-मुत्र वस्त्रों में निकल जाता था, उनकी जीभ पर छाले पड़ गए थे, पूरे शरीर पर, कंठ, मुंह के अन्दर, माथे पर, सिर पर छाले पड़ गए थे इस प्रकार अपने किए कर्म (मिथ्या भाषण रूप पाप) का दण्ड भोगते हुए दुर्दशा से मृत्यु हुई। पृष्ठ 437 से 451 पर)

स्वामी दयानन्द जी का स्वास्थ्य दो-चार दिन से कुछ शिथिल था अर्थात वे अस्वस्थ थे। आश्विन (आसौज) वदी चतुर्दशी सम्वत् 1940 को रात्री में जगन्नाथ नामक रसोईये से दूध लेकर पीया। कुछ निद्रा लेने के पश्चात् उल्टी तथा दस्त प्रारम्भ हो गए। पेट में प्रबल पीड़ा हो रही थी। मुंह सूख रहा था। डा. ने दवाई दी कोई आराम नहीं हुआ। जो भी दवाई डा. देता उल्टा ही प्रभाव होता था। दवाई लगना बंद हो गई तथा दवाई दुष्प्रभाव करने लगी। स्वामी दयानन्द

जी का शरीर जीर्ण-शीर्ण होने लगा। चार पांच दिन बाद एक सद्धर्म प्रचारक समाचार पत्र ने छापा की एक जगन्नाथ नामक ब्राह्मण ने स्वामी जी को विष दे दिया जो उन्हीं का रसोईया था। स्वामी जी ने जगन्नाथ रसोईया को कुछ रूपये देकर वहाँ से निकाल दिया कि कहीं इसे कोई मार न दे। क्योंकि जगन्नाथ निर्दोष था। यदि दोषी होता तो उसी रात्री को चम्पत हो जाता। जगन्नाथ भी ब्राह्मण था। स्वामी दयानन्द जी को कोई भी औषधी काम नहीं कर रही थी। उनके पूरे शरीर तथा कण्ठ, जीभ पर मुख में तथा माथे व सिर में छाले पड़ गए थे। पानी की घूट भी गले नहीं उतर रही थी। मल-मुत्र भी समय-कुसमय वस्त्रों में निकल जाने लगा। श्वांस-प्रश्वास की क्रिया बहुत तेज थी। उनका जी घबराता था, गला बैठ गया था, श्वास-प्रश्वास की गति बहुत तेज हो गई थी। सारी देह में दाह (आग) सी लगी थी।

संवत् 1940 आश्विनी वदी (कृष्णा) 14 से कार्तिक अमावस्या तक (एक मास तक) महा पीड़ा को भोग कर स्वामी दयानन्द जी का देहान्त हो गया।

पृष्ठ 453-454 पर लिखा है कि अन्तिम संस्कार करके भगवान दयानन्द जी की अस्थियों को उठाकर (फूल चुनकर) एक बाग (उद्यान) में गाड़ दिया।

❑❑❑